ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

छत्तीसगढ़ के गांधी युगीन समाज सुधार में डॉ. राधा बाई का योगदान

Contribution of Dr. Radha Bai in Gandhi Era Social Reform of Chhattisgarh

Paper Submission: 13/08/2021, Date of Acceptance: 23/08/2021, Date of Publication: 24/08/2021

विनोद कुमार जांगड़े
शोध छात्र,
इतिहास अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

आभा रूपेन्द्र पाल
विभागाध्यक्ष,
इतिहास अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

Abstract सारांश

गांधी जी ने समाज के दो आधारभूत महत्वपूर्ण अंग स्त्री व पुरूष को समानता को राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक बताया उन्होंने हमेशा न्याय समानता व शांति पर आधारित समाज के निर्माण को आवश्यक बताया। गांधी जी के विचारों का प्रभाव देश भर के महिलाओं पर व्यापक रूप से पड़ा इसमें छत्तीसगढ़ की महिलाएँ भी विशेष रूप से प्रभावित हुई। इसमें डॉ. राधाबाई ने गांधी जी द्वारा चलाये गये राष्ट्रीय आंदोलन में प्रमुख रूप से भाग लिया और साथ ही समाज सुधार कार्य व अछुतो द्धार कार्यक्रम को स्वाधीनता आंदोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना। डॉ. राधाबाई से प्रेरित होकर छत्तीसगढ़ के अनेक महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन व समाज सुधार आंदोलन में भाग लिया। राष्ट्रीय आंदोलन में सफलतापूर्वक भागीदारी के साथ साथ समाज सुधार के क्षेत्र में उनका अतुलनीय योगदान है। गांधी युगीन राष्ट्रीय आंदोलन के अंतर्गत समाज सुधार कार्यक्रम को रचनात्मक कार्यक्रम में शामिल किया गया ताकि राष्ट्रीय आंदोलन जन आंदोलन का रूप ले सके। निःसंदेह डॉ. राधा बाई का समाज सुधार आंदोलन एवं स्वतंत्रता आंदोलन में अतुलनीय योगदान रहा है।

Gandhiji described the equality of two basic important parts of the society as necessary for the development of the nation, he always called it necessary to build a society based on justice, equality and peace. Gandhiji's ideas had a wide impact on women across the country, in which the women of Chhattisgarh were also particularly affected. In this, Dr. Radhabai took a major part in the national movement run by Gandhi ji and also considered social reform work and untouchability program as an important part of the freedom movement. Inspired by Dr. Radhabai, many women of Chhattisgarh participated in the national movement and social reform movement. Along with successfully participating in the national movement, he has an incomparable contribution in the field of social reform. Under the Gandhi era national movement, the social reform program was included in the constructive program so that the national movement could take the form of a mass movement. Undoubtedly, Dr. Radha Bai has made an incomparable contribution to the social reform movement and freedom movement.

मुख्य शब्दः अस्पृश्यता, नारी जागरण, पिकेटिंग, अछूतोद्धार, सत्याग्रही, डिक्टेटर, कौमी एकता, मद्य निषेध आंदोलन, स्वराज, किसबिन नाच।

Untouchability, Women Awakening, Picketing, Untouchability, Satyagrahi, Dictator, Quami Unity, Prohibition Movement, Swaraj, Kissbin Dance.

प्रस्तावना

गांधी जी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसकी नींव न्याय, समानता व शांति पर आधारित हो इस उद्देश्य के प्राप्ति के लिए यह अत्यंत आवश्यक था कि समाज के दो आधारभूत व महत्वपूर्ण अंग स्त्री व पुरूष के मध्य समानता स्थापित हो।

राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में सन् 1920 से 1947 ई. तक गांधी युग के नाम से जाना जाता है गांधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन के साथ अन्य आंदोलनों को शामिल किया और आदिवासियों, किसानों, मजदूरों महिलाओ व दलितों की समस्याओं को राष्ट्रीय आंदोलन में प्रमुख स्थान दिया तथा इनके समस्याओं को दूर करने का आह्वान किया और यही कारण है कि राष्ट्रीय आंदोलन जन आंदोलन का रूप ले सका।

गांधी जी ने ऐसे स्वराज की बात कही जिसमें भेदभाव और असमानताएँ न हो और यह संदेश दिया कि हमारा उद्देश्य केवल अंग्रेजों को हटाना नहीं है बल्कि भारत में सामाजिक परिवर्तन लाना है। इस सामाजिक परिवर्तन के अंतर्गत जातिगत भेदभाव छुआछूत को दूर करने और स्त्री व पुरूष के मध्यम असमानताओ को दूर करने की बात कही।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ के गांधी युगीन समाज सुधार में डॉ. राधाबाई का योगदान पर केन्द्रित है प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ के समाज सुधार एवं राष्ट्रीय आंदोलन में छत्तीसगढ़ के महिलाओं के योगदान का अध्ययन करना है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतो पर आधारित है, द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में पं. सुन्दरलाल शर्मा ग्रंथागार, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायुपर के विभिन्न साहित्यों का अध्ययन किया गया है।

परिकल्पना

पहली परिकल्पना यह है कि डॉ. राधा बाई निःस्वार्थ सेवा भाव से समाज कार्य करने के कारण डॉ. राधा बाई के रूप में आदर व सम्मान प्राप्त किये। दूसरी परिकल्पना यह है कि गांधी जी के विचारों का प्रभाव छत्तीसगढ़ के महिलाओं पर भी व्यापक रूप से पड़ा और यहां के साधारण व निम्न जाति के महिलाओं से लेकर सवर्ण समाज के महिलाओं ने स्वतंतत्रता आंदोलन और समाज सुधार आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

विषय विस्तार

महात्मा गांधी द्वारा संचालित राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीय महिलाओं में राष्ट्र भक्ति के लिए अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न की। राष्ट्रीय स्तर पर कस्तुरबा गांधी, कमला नेहरू विजय लक्ष्मी पंडित, अरूणा आसफ अली, नलिनी सेन गुप्ता लाडोरानी, सुचेता कृपलानी, कमला देवी चट्टोपाध्याय, राजकुमारी अमृत कौर, जानकी देवी बजाज, दुर्गा बाई देशमुख, डॉ. सुशीला नैय्यर, इन्दिरा गांधी, अनुसुईया बाई, मणिबेन पटेल एवं सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने राष्ट्रीय आंदोलन को नवीन दिशा प्रदान करने में अभूतपूर्व योगदान दिया।

महात्मा गांधी के राष्ट्रीय आंदोलन एवं उनके विचारों का प्रभाव छत्तीसगढ़ के महिलाओं पर भी व्यापक रूप से पड़ा उनसे प्रभावित होकर महिलाएँ अनेक रचनात्मक कार्य में शामिल होने लगी और राष्ट्रीय व राजनीतिक चेतना में बढ़ चढ़कर शामिल होने लगी। गांधी जी के अछूतोद्धार कार्यक्रम व छत्तीसगढ़ के स्थानीय नेतृत्वकर्ता जैसे पं. सुन्दर लाल शर्मा, दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त आदि के विचारों से प्रभावित होकर समाज सुधार के क्षेत्र में महिलाओं ने अभूतपूर्व योगदान दिया।

अछूतोद्धार कार्यक्रम, मद्य निषेध आंदोलन से लेकर समाज सुधार आंदोलन में छत्तीसगढ़ के महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया इनमें राधाबाई, मिनीमाता, राजमोहिनी देवी, श्रीमती फुलकुंवर बाई श्रीवास्तव, श्रीमती केतकी बाई बघेल, श्रीमती पोचीबाई, श्रीमती रूखमिन बाई, श्रीमती पार्वती बाई, श्रीमती जमुना बाई श्रीमती रोहिणी बाई परगनिहा आदि सहित अनेक महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन के माध्यम से समाज सुधार आंदोलन में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया।

राधा बाई छत्तीसगढ़ की उन महिलाओं में से थी जिन्होंने समाज सेवा व राष्ट्र सेवा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

डॉ. राधा बाई का जन्म सन् 1875 में नागपुर के इतवारी मोहल्ले में हुआ था बहुत कम उम्र में उनकी विवाह कर दी गई और वे 9 वर्ष के आयु में ही विधवा हो गई। परिवार में वह अकेली रह गई कायस्थ परिवार में पैदा हुई राधा बाई को ब्राह्मण पड़ोसी परिवार का सहयोग मिला और पड़ोसिन सखी के साथ हिन्दी सीखने लगी ।1 बचपन बीतने के बाद जीविकोपार्जन के लिए उन्होंने सेवा कार्य के रूप में दाई के कार्य को चुना और नागपुर नगर पालिका में दाई का कार्य करने लगी।

सन् 1918 में वे रायपुर आई और तात्यापारा में स्थाई रूप से रहने लगी और रायपुर नगर पालिका में दाई का काम करने लगी। भले ही वे मिडवाइफ थी लेकिन उनके द्वारा किए गये सेवा कार्य, और उनके राष्ट्र प्रेम की भावना के कारण लोग उन्हें आदर से डॉ. राधा बाई कहने लगे।[2]

इस सम्मान के कारण प्रत्येक परिवार उनका परिवार बन गया था प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह अमीर हो या गरीब सब राधा बाई का आदर करते थे। उनके पहुंचते ही प्रसव पीड़ा से पीड़ित मां निश्चित हो जाती थी। उनका सेवा कार्य से प्रभावित होकर रायपुर नगर पालिका की ओर से उन्हें सम्मान स्वरूप टांगा - घोड़ा गाड़ी प्रदान किया गया था भले ही वह एक साधारण दाई थी परंतु नागरिकों के लिए वह एक कुशल डॉक्टर थी। इसीलिए लोग उन्हें आदर से डॉ. राधा बाई पुकारने लगे।[3]

20 दिसम्बर सन् 1920 को महात्मा गांधी प्रथम बार रायपुर आये अपने रायपुर आगमन के दिन गांधी चौक मैदान में अपार जनसमूह को सम्बोधित किया। उनका रायपुर आगमन धमतरी के कण्डेल ग्राम में चल रहे नगर सत्याग्रह के संबंध में हुआ था। गांधी जी रायपुर से मोटर द्वारा कुरूद होते हुए धमतरी गये। मार्ग पर अनेक स्थानों ग्रामवासियों की अपार भीड़ ने उनका जोरदार स्वागत सम्मान किया। गांधी जी के कण्डेल पहुंचने से पहले कंडेल सत्याग्रह स्थगित हो गया था। क्योंकि ब्रितानिया हुकुमत के नौकरशाहों ने सत्याग्रहियों के सामने विवश होकर उनकी बात मान ली।[4]

गांधी जी धमतरी से ही वापस लौट आये और रायपुर प्रवास के दौरान उन्होंने महिलाओं के अपार जनसमूह को संबोधित किया। गांधी जी ने तिलक स्वराज फण्ड के लिए दान करने की अपील की उनकी इस अपील पर महिलाओं ने तुरंत दो हजार रूपये तक के गहने सहर्ष दान कर दिये।[5]

गांधी जी के विचारों का छत्तीसगढ़ के निवासियों पर व्यापक रूप से पड़ा इनमें महिलाएं भी शामिल थी डॉ. राधा बाई भी गांधी जी के विचारों से बहुत प्रभावित हुई वे तुरंत इस आंदोलन में सम्मिलित हो गई और सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में भाग लेने लगी।

रायपुर में डॉ. राधा बाई ने सत्याग्रही बहनों का एक समूह तैयार किया जिसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ. खुबचंद बघेल की मां श्रीमती केतकी बाई, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मनोहर लाल श्रीवास्तव की मां फूलकुंवर बाई श्रीवास्तव, मनोहर लाल श्रीवास्तव की पत्नी श्रीमती पोची बाई, उनकी सहेली रूखमिन बाई। गनौद वाले शंकर राव की पत्नी श्रीमती पार्वती बाई, श्रीमती रोहणी बाई, परगनिहा जमुना बाई और अन्य महिलाएं राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हुई और अनेक रचनात्मक कार्यों में भाग लिया।[5]

अस्पृश्यता निवारण

दूसरा कार्यक्रम जिसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया वह था अछूतोद्धार कार्यक्रम। रायपुर नगर में इस कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. राधा बाई ने किया। अछूतोद्धार के इस समाज सुधार कार्य में डॉ. खुबचंद बघेल की मां श्रीमती केतकी बाई बघेल का उन्हें भरपूर सहयोग मिला। वहां के महिलाएं प्रायः प्रत्येक मोहल्ले में जाकर वहां के महिलाओं को इकट्ठा कर जन जागरण का कार्य करती थी। डॉ. राधा बाई 1920-30 के दशक में समाज सेविका के रूप में प्रसिद्ध हो गई समाज सेवा के प्रति उनके समर्पण के भाव को देखकर उन्हें प्यार और आदर से डॉ. राधा बाई पुकारने लगे।[6]

डॉ. राधा बाई गांधी जी के रचनात्मक कार्यों से बहुत प्रभावित थी इन में अछूतोद्धार कार्यक्रम के अंतर्गत समूह में शामिल सहयोगी बहनों के साथ निम्न जातियों के मोहल्ले में जाती उनके बच्चों को नहलाती पढ़ाती और मोहल्लों के साफ-सफाई में भी अपना सहयोग प्रदान करती। इन कार्यों को करने में उन्होंने कभी संकोच नहीं किया।[7]

जेल में सत्याग्रही बहनों और अन्य महिला कैदियों के साथ सम्पर्क में आने पर उनकी हितों के लिए आवाज उठाती एवं उन्हें आध्यात्मिक उन्नति और सत्याग्रह के लिए प्रेरित करती थी। जेल से बाहर निकलते ही अपने सेवा कार्य में उसी तनम्यता के साथ संलग्न हो जाती। खादी और चरखा उनके नैतिक जीवन का हिस्सा बना रहा प्रतिदिन चरखा कातती उन्होंने ही अनेक सत्याग्रही बहनों को चरखा कातना सिखाया।[8]

डॉ. राधा बाई सन् 1930 से लेकर 1942 तक सत्याग्रह व राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेती रही इसके साथ ही समाज सेवा व मानव सेवा को परम ध्येय बना लिया वे सभी व्यक्तियों को एक समान मानती थी उन्होंने कभी किसी के साथ जाति, धर्म और भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं किया और छोटे बच्चों के लालन-पालन, अनाथ बच्चों की देखरेख व उन्हें शिक्षा देने का कार्य करती थी।9

डॉ. राधा बाई का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से जो युद्ध समिति गठित की गई थी उसमें डिक्टेटरों की सूची में राधा बाई का नाम चौथा स्थान पर रखा गया था गठित समिति का नियम था एक डिक्टेटर के गिरफ्तार हो जाने पर दूसरा डिक्टेटर उनका स्थान ले लेता था इस प्रकार आंदोलन का संचालन निरंतर चलता रहा।[10]

सन् 1930-31 में सम्पूर्ण रायपुर जिले के आंदोलन का केन्द्र रायपुर नगर था विदेशी वस्तुओं के दुकानों तथा मद्य निषेध आंदोलन के तहत शराब दुकानों पर पिकेटिंग करने का निर्णय लिया गया था उस समय पं. सुन्दरलाल शर्मा तीसरे डिक्टेटर थे उन्हें 20 अप्रैल 1932 को रायपुर में गिरफ्तार कर लिया गया। फलस्वरूप आंदोलन का नेतृत्व चौथे डिक्टेटर डॉ. राधा बाई ने किया।11 सन् 1932 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में रायपुर जिला की कुल 23 महिलाएं शामिल हुई जिनमें से 11 सत्याग्रहियों को कारावास की सजा हुई। इनमें केतकी बाई बघेल, रूकमणी बाई और रामबती ने दो-दो पिकेटिंग में भाग लिया। 23 मार्च, 1932 को कीका भाई की दुकान के सामने धरना दे रही सत्याग्रहियों जिनमें श्रीमती फुटेनिया बाई, मनटोरा बाई, केजा बाई तथा मुटकी बाई शामिल थी उन्हें पुलिस घसीटकर कोतवाली ले गया।[12]

ऐसी ही घटना दूसरी बार कीका भाई के दुकान के सामने अप्रैल में घटी जिसमें श्रीमती रामबती, कुंवर बाई, अमृत बाई को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और रामबती को घसीटते हुए व अन्य महिला को धक्का देते हुए कोतवाली लाया गया। कोतवाली में उन लोगों के साथ अभद्र व्यवहार किया गया। इस घटना की शिकायत उन्होंने डॉ. राधा बाई से की डॉ. राधा बाई की अध्यक्षता में 13 अप्रैल को एक आमसभा आयोजित की गई जिसमें डॉ. राधा बाई ने महिला सत्याग्रहियों के प्रति अभद्रतापूर्ण व्यवहार की जानकारी आम जनता को दी। इस आमसभा में पुलिस के दुर्व्यवहार की तीव्र आलोचना की गई।[13]

"कीका भाई की दुकान के सामने हुए इन महिला सत्याग्रहियों ने गिरफ्तारी दी-

1. केतकी बाई बघेल, खुबचंद बघेल की मां - 25 रू. जुर्माना, 6 माह की सजा।
2. रूकमणी बाई - दो बार पिकेटिंग - 25 रू. जुर्माना, 6 माह की सजा।
3. ग्राम भंडार की महिला नाम नही दिया गया है छोड़ दी गई।
4. बेला बाई - भुज्जबल तरसने की पत्नी - 6 माह की सजा।
5. फूलकुंवर बाई - मनोहर लाल श्रीवास्तव की मां- 6 माह की सजा।
6. कृष्णा बाई - 6 माह की सजा।
7. पार्वती बाई - शंकर राव गनौद वाले की पत्नी - 6 माह की सजा।
8. रूपवती बाई - भारत तेली सारागांव की पत्नी - 6 माह की सजा।
9. रोहणी बाई - माधव राव परगनिहा की पत्नी - 6 माह की सजा।
10. गंगा राम भंडार वाले की पत्नी - 6 माह की सजा।
11. अन्नू बाई बलौदाबाजार - छोड़ दी गई।
12. रामबती बाई (बंगोली) दो बार पिकेटिंग - दोनो बार छोड़ दी गई।
13. दया बाई - बंगोली - दो बार पिकेटिंग - दोनो बार छोड़ दी गई।
14. दोमन बाई (बैरागिनी) दो बार पिकेटिंग - दोनो बार छोड़ दी गई।
15. गेहरू राम तेली की पत्नी (नाम नही) - 6 माह की सजा।
16. मनटोरा बाई (सारागांव) - छोड़ दी गई।
17. मुटकी बाई, तेली सारागांव - छोड़ दी गई।
18. फुंटेनिया बाई सारागांव - छोड़ दी गई।
19. डॉ. राधा बाई - 25 रू. जुर्माना 6 माह की सजा।
20. गोहरी बाई - 3 माह की सजा।
21. कुंवर बाई - छोड़ दी गई।
22. अमृत बाई - छोड़ दी गई।" [14]

सन् 1932 में डॉ. राधा बाई की आयु 57 वर्ष की थी लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी सक्रियता इस बात का परिचायक है कि राष्ट्र और समाज सेवा के प्रति उनका समर्पण किसी युवा से कम नहीं थी कौमी एकता, स्वदेशी आंदोलन, नारी जागरण, अस्पृश्यता निवारण, मद्य निषेध आंदोलन आदि में उन्होंने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। रायपुर नगर में स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थी जिन्होंने न केवल सत्याग्रही महिलाओं का संगठन तैयार किया बल्कि अपने कुशल नेतृत्व का परिचय भी दिया। जेल भी गई और पुलिस के अभद्रतापूर्ण व्यवहार व दमन का दृढ़ता पूर्वक सामना भी किया।

समाज सुधार कार्य के रूप में -

छत्तीसगढ़ में उन दिनों गांवो और शहरों के सामंतो के यहां किसबिन नाच हुआ करता था जिसमें कुछ ग्रामीण महिलाएं शामिल थी ये महिलाएं वैश्यावृत्ति के काम में लग जाती थी किसबिन नाच करने वाले लोगों की अलग जाति बन गई थी और वे लोग अपने ही परिवार के कुंवारी लड़कियों को इसमें शामिल करने लगते थे। डॉ. राधा बाई ने न केवल इस प्रथा का विरोध किया बल्कि किसबिन नाच को बंद कराने के लिए अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। खरोरा नामक गांव में इस प्रथा की समाप्ति सबसे पहले हुई थी। यहां के लोगों ने कृषि कार्य को अपनाया। यह अभूतपूर्व परिवर्तन डॉ. राधा बाई के अपार परिश्रम के कारण ही संभव हो सका था।[15]

डॉ. राधा बाई पुलिस के दमन व उनके भय का परवाह किए बगैर आजीवन निःस्वार्थ भाव से समाज व राष्ट्र की सेवा करती रही उन्होंने कभी पद प्रतिष्ठा व धन की लालसा नहीं की। कांग्रेस भवन निर्माण के लिए अपनी बहुत सी सम्पत्ति दान कर दी और उन्होंने स्वयं मजदूर (रेजा) के रूप में कार्य कर के प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया।[16]

कांग्रेस भवन निर्माण के लिए किसानों से मुट्ठी - मुट्ठी भर अनाज लेकर 65 वर्ष के आयु में भी परिश्रम का पसीना बहा उन्होंने अमूल्य योगदान दिया था।

शराब बंदी का मोर्चा सबसे कठिन मोर्चा था शराबियों से शराब छोड़ने के लिए मना करना शराब दुकानों में धरना देना शराब भट्ठी बंद करवाना कोई आसान काम नहीं था क्योंकि इस पिकेटिंग में लगे लोगो को पुलिस के द्वारा बर्बरता पूर्वक लाठी से मारा-पीटा जाता था महिलाओं के बाल पकड़कर घसीटते हुए कोतवाली लाया जाता था और समाज में भी महिलाओं का शराब दुकानों में जाना अच्छा नहीं माना जाता था फिर भी इन सबकी परवाह किए बगैर डॉ. राधा बाई के नेतृत्व में सत्याग्रही महिलाओं के द्वारा सफलतापूर्वक आंदोलन किए गये।

डॉ. राधा बाई का जन्म भले ही ब्रितानिया हुकूमत के दौर में हुआ है लेकिन उनका आजादी का सपना पूरा हुआ। स्वराज्य लक्ष्य प्राप्ति को पूरा कर सुन्दर राष्ट्र का सपना लिए 2 जनवरी 1950 को माघ पूर्णिमा के दिन 85 वर्ष की आयु में मृत्यु की गोद में हमेशा के लिए चली गई।[17]

नये राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ अस्तित्व में आने के बाद तात्कालिन छत्तीसगढ़ सरकार के शिक्षामंत्री श्री सत्यनारायण शर्मा जी ने पुरानी बस्ती रायपुर में स्थित नवीन कन्या महाविद्यालय का नाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाम पर परिवर्तन स्वीकार कर लिया और उन्होंने 1 अक्टूबर 2003 को नवीन कन्या महाविद्यालय का नाम डॉ. राधा बाई नवीन कन्या महाविद्यालय कर दिया।[18]

निष्कर्ष

राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी के साथ साथ समाज सुधार के क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ. राधाबाई का अतुलनीय योगदान रहा है। गांधी युगीन समाज सुधार आंदोलन, राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा रहा है इसलिए राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल लोगों ने समाज सुधार कार्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। राधाबाई ने छत्तीसगढ़ में अस्पृश्यता निवारण के अंतर्गत गांधी जी के अछूतोद्धार कार्यक्रम को रचनात्मक रूप दिया और छत्तीसगढ़ के सवर्ण समाज के महिलाओं ने भी उनके नेतृत्व में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। दाई के रूप में किये गये निःस्वार्थ सेवा भाव के कारण वे डॉ. राधाबाई के रूप में प्रसिद्ध हुई निःसंदेह छत्तीसगढ़ में स्वाधीनता आंदोलन और समाज सुधार आँदोलन में डॉ. राधाबाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *परमार, नारायण लाल, छत्तीसगढ़ के रत्न भाग-दो, सुधीर प्रकाशन रायपुर 2000 पृ. 45-46।*
2. *भूषण, केयूर, छत्तीसगढ़ के नारी रत्न, जन चेतना प्रकाशन रायपुर, 2005 पृ. 25-26।*
3. *उपरोक्त, पृ. 48।*
4. *ठाकुर, हरि, छत्तीसगढ़ पर गांधी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव, छत्तीसगढ़ में गांधी जी, सम्पादक ठा.भा. नायक, गांधी शताब्दी समारोह समिति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, 1970 पृ. 2।*
5. *भूषण, केयूर, पूर्वोक्त पृ. 53।*
6. *पाल, आभा आर. गांधीवादी जन आंदोलन में छत्तीसगढ़ की महिलाओं की भूमिका Saga of woman hood, Editors G.C. Saxena etc., Anamica Publishers and Distributors New Delhi, 2011पृ . 340*
7. *शुक्ल, अशोक, छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक चेतना का विकास, रायपुर 1988 पृ. 34।*
8. *भूषण केयूर पूर्वोक्त पृ. 54।*
9. *परमार, नारायण लाल, पूर्वोक्त पृ. 48।*
10. *भगत, अवधेश्वरी, सरगुजा अंचल के सामाजिक जागरण में गहिरा गुरू का योगदान, शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर 2018, पृ. 153।*
11. *वर्मा, आकांक्षा, आधुनिक काल में नारी उत्थान छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में (1800 से 1950 ई. तक) शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर 2005, पृ. 183।*
12. *पाल, आभा आर., पूर्वोक्त, पृ. 343।*
13. *रायपुर नगर निगम रिपोर्ट, 1971-72, पृ. 40।*
14. *पाल, आभा आर. पूर्वोक्त, पृ. 344।*
15. *भूषण, केयूर, डॉ. राधा बाई स्वतंत्रता सेनानी www.lgnca.nic.in/coilnet/chgr 000.6htm अभिगमन तिथि, 16 अक्टुबर 2019।*
16. *मिश्र, प्रकाशवती, मेरी राष्ट्रीय चेतना के प्रणेता महात्मा गांधी जी, छत्तीसगढ़ में गांधी जी, संपादक ठा.भा. नायक पूर्वोक्त, पृ. 89।*
17. *परमार, नारायण लाल पूर्वोक्त, पृ. 48।*
18. *भूषण केयूर, छत्तीसगढ़ के नारी रत्न पूर्वोक्त पृ.*30।